Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

उपराष्ट्रपति से मिला कोरोना संक्रमित... 12 | 2022 में राष्ट्रवादियों का चुनाव प्रचार करूंगी: कंगना 10

जन एक्सप्रेस

www.janexpresslive.com/epaper लखनऊ | रविवार | 05 दिसंबर, 2021

तंबाकू फसल में खरपतवार प्रबंधन पर परीक्षणों के परिणाम उत्साहजनक

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित अखिल भारतीय समन्वित तंबाकू परियोजना अरौल के प्रभारी एवं अभिजनक डॉ. अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र पर तंबाकू फसल में खरपतवार प्रबंधन पर लगाए गए तीन वर्षों के परीक्षणों के परिणाम उत्साहजनक प्राप्त हुए हैं। जिसे अखिल भारतीय तंबाकू की 25वीं कार्यशाला में डॉक्टर श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ.टी.आर. शर्मा एवं कमेटी के अन्य सदस्यों द्वारा इस नवीन शस्य तकनीक को उत्तर प्रदेश के लिए अनुमोदित किया गया।

डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि इस शस्य तकनीक के प्रयोग से सामान्य तकनीक की अपेक्षा लगभग दो से ढाई गुना अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ तथा तंबाकू की पत्तियों में निकोटिन की मात्रा 3.5 से 4.5 प्रतिशत तक पाई गई जबकि अन्य तकनीक में 2.5 से 3त्र तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को किसानों के प्रक्षेत्र पर शीघ्र ले जाया जाएगा जिससे किसानो को इस तकनीक से लाभ मिल सके। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में तंबाकू के अंतर्गत लगभग 28 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल कानपुर नगर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, मैनपुरी, आजमगढ़, बलिया इत्यादि जनपदों में की जाती है।

कानपुर। रविवार • 5 दिसम्बर • 2021

राष्ट्रीय सहारा

प्रदूषण घटाने को जैविक खेती ही बेहतर विकल्प

सीएसए में केंद्र उपोष्ण उद्यान संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. आरके पाठक का स्वागत करते कार्यक्रम आयोजक। फोटो : एसएनबी

सीएसए के व्याख्यान कार्यक्रम में गाय के गोबर की खाद से खेती-बारी के लाभ गिनाये गये

कानपुर (एसएनबी)। वर्तमान परिदृश्य में प्रदूषण जैसी समस्याओं से निजात पाने के लिए होमा जैविक खेती एक बेहतर विकल्प है। होमा जैविक खेती के तहत गाय के गोबर की खाद की मदद से खेती की जाती है। इससे फसल का उत्पादन बढ़ने के साथ ही फसल भी गुणवत्तायुक्त होती है। खेत की मिट्टी भी धीरे-धीरे उपजाऊ होना शुरू हो जाती है।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में शनिवार को आयोजित 'आजादी का अमृत महोत्सव में कृषि परिवार की भूमिका' विषयक व्याख्यान में मुख्य वक्ता केन्द्रीय उपोष्ण उद्यान संस्थान, रहमानखेड़ा (लखनऊ) के पूर्व निदेशक डॉ. आरके पाठक ने गाय के गोबर की खाद पर आधारित होमा जैविक खेती के बारे में सविस्तार बताया। उन्होंने कहा कि गाय का दूध जहां शरीर के लिए फायदेमंद है, वहीं उसका गोबर खेती के लिए लाभदायक है।

गाय के गोबर का छिड़काव यदि खेतों में हो और इसका लेप पौधों में लगाया जाय तो कई बीमारियों से फसल मुक्त हो सकेगी। उन्होंने किसानों को रासायनिक खेती छोड़कर गाय के गोबर का प्रयोग करने को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। कार्यक्रम में निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश, विभागाध्यक्ष उद्यान डॉ.वीके त्रिपाठी, डॉ. नौशाद खान, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. आरपी सिंह, डॉ. संजीव कुमार यादव, डॉ. रामजी गुप्ता सहित अन्य शिक्षकों-छात्रों ने भागीदारी की।

2 दैनिक जागरण कानपुर, 5 दिसंबर, 2021

फसल में खरपतवार के नियंत्रण से बढ़ा तंबाकू का उत्पादन

जासं, कानपुर : खुरपी की सहायता से तीन बार खरपतवार निकालने और पालीथिन मल्च से खरपतवार नियंत्रित करने पर तंबाकू का दो से ढाई गुना अधिक उत्पादन प्राप्त हो रहा है। साथ ही तंबाकू की पत्तियों में निकोटिन की मात्रा भी 3.5 फीसद से बढ़कर 4.5 फीसद पाई गई है। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) में आयोजित कार्यशाला में अखिल भारतीय समन्वित तंबाकू परियोजना प्रभारी डा. अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने यह जानकारी दी। कार्यशाला की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक डा. टीआर शर्मा ने की और कमेटी के सदस्यों ने नवीन शस्य तकनीक को उत्तर प्रदेश के लिए अनुमोदित किया। डॉ. एनबी सिंह व मृदा वैज्ञानिक डा. खलील खान का विशेष सहयोग रहा।

Sign in to edit and save changes to this file.

आज | महानगर | कानपुर 5 दिसम्बर 2021 | 4

तंबाकू फसल में खरपतवार नियंत्रण तकनीकी के परिणाम उत्साहजनक

कानपुर, 4 दिसम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित अखिल भारतीय समन्वित तंबाकू परियोजना अरौल के प्रभारी एवं अभिजनक डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र पर तंबाकू फसल में खरपतवार प्रबंधन पर लगाए गए तीन वर्षों के परीक्षणों के परिणाम उत्साहजनक प्राप्त हुए हैं। जिसे अखिल भारतीय तंबाकू की 25वीं कार्यशाला में डॉ श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया।

कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ टीआर शर्मा एवं कमेटी के अन्य सदस्यों द्वारा इस नवीन शस्य तकनीक को उत्तर प्रदेश हेतु अनुमोदित किया गया। साथ ही उन्होंने निदेशक केंद्रीय तंबाकू अनुसंधान संस्थान राजामुंदरी डा. डी. दामोदर रेड्डी को निर्देशित किया, कि इस तरह की किसान उपयोगी शस्य तकनीकों को उत्तर प्रदेश ही नहीं देश के अन्य प्रदेशों एवं अन्य फसलों में भी उपयोग में लाया जाए। डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि इस शस्य तकनीक (खुरपी की सहायता से तीन बार खरपतवार निकालना एवं पॉलीथिन मल्च द्वारा खरपतवार नियंत्रण) के प्रयोग से सामान्य तकनीकी अपेक्षा लगभग दो से ढाई गुना अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ। एवं तंबाकू की पत्तियों में निकोटिन की मात्रा 3.5 से 4.5 प्रतिशत तक पाई गई जबकि अन्य तकनीक में 2.5 से 3त्र तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि शुद्ध लाभ सामान्य तकनीकी की अपेक्षा डेढ़ से दो गुना अधिक तक प्राप्त हुआ है। अतः किसानों कि आय व मृदा स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से यह अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को किसानों के प्रक्षेत्र पर शीघ्र ले जाया जाएगा जिससे किसान इस तकनीक से लाभान्वित हो। ज्ञातव्य हो कि डॉ. श्रीवास्तव द्वारा तीन बहु उपयोगी कृषि शस्य तकनीकों को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा अनुमोदित कराई जा चुकी हैं। डॉ श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में तंबाकू के अंतर्गत लगभग 28 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जो कानपुर नगर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, मैनपुरी, आजमगढ़, बलिया इत्यादि जनपदों में की जाती है। डा. अरविंद श्रीवास्तव ने बताया कि इस तकनीक को विकसित करने में टीम के सदस्य डॉक्टर एनबी सिंह एवं डॉ खलील खान मृदा वैज्ञानिक का विशेष योगदान रहा।

कार्यशाला के दौरान मौजूद किसान।

विवादिकों के विचारीकरण के लिये सम्मन (आदेश 5 के नियम 1 और 5) (शीर्षक) प्रेषिति-न्यायालय श्रीमान अपर पारिवारिक न्यायालय कानपुर देहात वाद संख्या-332/19 सर्वेश कुमार पुत्र शिवराम निवासी ग्राम व पोस्ट रसधान थाना व तहसील सिकन्दरा कानपुर देहात बनाम श्रीमती निर्मला देवी कुशवाहा

पुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 13 अंक: 154 कानपुर, रविवार 05 दिसम्बर, 2021 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुप

राष्ट्रीय स्वरूप

तंबाकू फसल में खरपतवार नियंत्रण तकनीकी के परिणाम उत्साहजनक: डॉ. अरविंद

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित अखिल भारतीय समन्वित तंबाकू परियोजना अरौल के प्रभारी एवं अभिजनक डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र पर तंबाकू फसल में खरपतवार प्रबंधन पर लगाए गए तीन वर्षों के परीक्षणों के परिणाम उत्साहजनक प्राप्त हुए हैं। जिसे अखिल भारतीय तंबाकू की 25वीं कार्यशाला में डॉक्टर श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ टीआर शर्मा एवं कमेटी के अन्य सदस्यों द्वारा इस नवीन शस्य तकनीक को उत्तर प्रदेश हेतु अनुमोदित किया गया। साथ ही उन्होंने निदेशक केंद्रीय तंबाकू अनुसंधान संस्थान राजामुंदरी डा.डी. दामोदर रेड्डी को निर्देशित किया। कि इस तरह की किसान उपयोगी शस्य तकनीकों को उत्तर प्रदेश ही नहीं देश के अन्य प्रदेशों एवं अन्य फसलों में भी उपयोग में लाया जाए। डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि इस शस्य तकनीक (खुरपी की सहायता से तीन बार खरपतवार निकालना एवं पॉलीथिन मल्च द्वारा खरपतवार नियंत्रण) के प्रयोग से सामान्य तकनीकी अपेक्षा लगभग दो से ढाई गुना अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ। एवं तंबाकू की पत्तियों में निकोटिन की मात्रा 3.5 से 4.5 प्रतिशत तक पाई गई जबकि अन्य तकनीक में 2.5

से 3% तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि शुद्ध लाभ सामान्य तकनीकी की अपेक्षा डेढ़ से दो गुना अधिक तक प्राप्त हुआ है। अतः किसानों कि आय व मृदा स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से यह अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को किसानों के प्रक्षेत्र पर शीघ्र ले जाया जाएगा जिससे किसान इस तकनीक से लाभान्वित हो। ज्ञातव्य हो कि डॉक्टर श्रीवास्तव द्वारा तीन बहु उपयोगी कृषि शस्य तकनीकों को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा अनुमोदित कराई जा चुकी हैं। डॉ श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में तंबाकू के अंतर्गत लगभग 28 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जो कानपुर नगर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, मैनपुरी, आजमगढ़, बलिया इत्यादि जनपदों में की जाती है। डॉक्टर अरविंद श्रीवास्तव ने बताया कि इस तकनीक को विकसित करने में टीम के सदस्य डॉक्टर एनबी सिंह एवं डॉ खलील खान मृदा वैज्ञानिक का विशेष योगदान रहा।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

शनिवार, 04-12-2021 अंक- 420
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस

MID DAY E-PAPER

तंबाकू की फसल में खरपतवार नियंत्रण करने की तकनीक बेहतर: डॉ. श्रीवास्तव

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित अखिल भारतीय समन्वित तंबाकू परियोजना, अरौल के प्रभारी एवं अभिजनक डॉ. अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र पर तंबाकू की फसल में खरपतवार प्रबंधन पर लगाए गए तीन वर्षों के परीक्षणों के परिणाम उत्साहजनक रहे हैं। इसे अखिल भारतीय तंबाकू की 25वीं कार्यशाला में डॉ. श्रीवास्तव ने प्रस्तुत किया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. टीआर शर्मा व कमेटी के अन्य सदस्यों ने इस नवीन शस्य तकनीक को उत्तर प्रदेश के लिए अनुमोदित किया है।

साथ ही उन्होंने निदेशक केंद्रीय तंबाकू अनुसंधान संस्थान राजामुंदरी डॉ. डी. दामोदर रेड्डी को निर्देशित किया कि इस तरह की किसान उपयोगी शस्य तकनीकों को प्रदेश ही नहीं, देश के अन्य प्रदेशों व अन्य फसलों में भी उपयोग में लाया जाए। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि इस शस्य तकनीक (खुरपी की सहायता से तीन बार खरपतवार निकालना व पॉलीथिन मल्च से खरपतवार नियंत्रण) के प्रयोग से सामान्य तकनीकी अपेक्षा लगभग दो से ढाई गुना अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ। तंबाकू की पत्तियों में निकोटिन की मात्रा 3.5 से 4.5 प्रतिशत तक पाई गई जबकि अन्य तकनीक में 2.5 से 3 फीसदी तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि शुद्ध लाभ सामान्य तकनीकी की अपेक्षा डेढ़ से दो गुना अधिक तक रहा। किसानों कि आय व मृदा स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को किसानों के प्रक्षेत्र पर शीघ्र ले जाया जाएगा जिससे किसान इस तकनीक से लाभांवित हो। बता दें कि डॉ. श्रीवास्तव की तीन बहु उपयोगी कृषि शस्य तकनीकों को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने अनुमोदित किया है। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि प्रदेश में तंबाकू के अंतर्गत लगभग 28 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है जो कानपुर नगर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, मैनपुरी, आजमगढ़, बलिया जनपदों में की जाती है। डॉ. अरविंद श्रीवास्तव ने बताया कि इस तकनीक को विकसित करने में टीम के सदस्य डॉ. एनबी सिंह व डॉ. खलील खान मृदा वैज्ञानिक का विशेष योगदान रहा।

Sign in to edit and save changes to this file.

तंबाकू की पत्तियों में निकोटिन 3. 50 से 4. 50 प्रतिशत

तंबाकू फसल में खरपतवार नियंत्रण तकनीकी के परिणाम उत्साहजनक

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित अखिल भारतीय समन्वित तंबाकू परियोजना अरौल के प्रभारी एवं अभिजनक डॉ अरविंद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र पर तंबाकू फसल में खरपतवार प्रबंधन पर लगाए गए तीन वर्षों के परीक्षणों के परिणाम उत्साहजनक प्राप्त हुए हैं। जिसे अखिल भारतीय तंबाकू की 25वीं कार्यशाला में डॉक्टर श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ टीआर शर्मा एवं कमेटी के अन्य सदस्यों द्वारा इस नवीन शस्य तकनीक को उत्तर प्रदेश हेतु अनुमोदित किया गया। साथ ही उन्होंने निदेशक केंद्रीय तंबाकू अनुसंधान संस्थान राजामुंदरी डा.डी. दामोदर रेड्डी को निर्देशित किया। कि इस तरह की किसान उपयोगी शस्य तकनीकों को उत्तर प्रदेश ही नहीं देश के अन्य प्रदेशों एवं अन्य फसलों में भी उपयोग में लाया जाए।

खरपतवार निकालने से उत्पादन ढाई से 3 गुना ज्यादा होता

डॉ श्रीवास्तव ने बताया कि इस शस्य तकनीक (खुरपी की सहायता से तीन बार खरपतवार निकालना एवं पॉलीथिन मल्च द्वारा खरपतवार नियंत्रण) के प्रयोग से सामान्य तकनीकी अपेक्षा लगभग दो से ढाई गुना अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ। एवं तंबाकू की पत्तियों में निकोटिन की मात्रा 3.5 से 4.5 प्रतिशत तक पाई गई जबकि अन्य तकनीक में 2.5 से 3% तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि शुद्ध लाभ सामान्य तकनीकी की अपेक्षा डेढ़ से दो गुना अधिक तक प्राप्त हुआ है। अतः किसानों कि आय व मृदा स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से यह अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को किसानों के प्रक्षेत्र पर शीघ्र ले जाया जाएगा जिससे किसान इस तकनीक से लाभान्वित हो। ज्ञातव्य हो कि डॉक्टर श्रीवास्तव द्वारा तीन बहु उपयोगी कृषि शस्य तकनीकों को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा अनुमोदित कराई जा चुकी हैं। डॉ श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में तंबाकू के अंतर्गत लगभग 28 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जो कानपुर नगर, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा, मैनपुरी, आजमगढ़, बलिया इत्यादि जनपदों में की जाती है। डॉक्टर अरविंद श्रीवास्तव ने बताया कि इस तकनीक को विकसित करने में डॉक्टर एनबी सिंह का विशेष योगदान रहा।

05/12/2021

दैनिक नगर छाया आप की आवाज़..... WWW.nagarchhaya.com कानपुर

सीएसए ने अलसी के बीजों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कर तैयार किए आजाद लड्डू

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अखिल भारतीय समन्वित अलसी शोध परियोजना द्वारा अलसी के बीजों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कर ओमेगा-3 से भरपूर आजाद लड्डू बनाने की विधि का विकास किया है। योजना के प्रभारी डॉ नरेंद्र सिंह सचान ने बताया कि उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल 0.32 लाख हेक्टेयर, उत्पादन 0.17 लाख टन एवं उत्पादकता 531 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उन्होंने कहा कि जिस घर में अलसी का सेवन होता है वह घर निरोगी होता है । डॉ सिंह ने कहा कि अलसी के बीजों में प्रोटीन 21 फ़ीसदी, खनिज लवण 3 फ़ीसदी, कार्बोहाइड्रेट 29 फ़ीसदी तथा ऊर्जा 530 किलोग्राम कैलोरी कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम,लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम इसके अतिरिक्त कैरोटीन, थायमिन, राइबोफ्लेविन एवं नायसीन भी होता है। निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने बताया कि ओमेगा-3 मानव शरीर के लिए आवश्यक वसा अम्ल

है। जो शरीर में नहीं बनता है बल्कि भोजन के माध्यम से ही शरीर में पहुंचता है। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि ओमेगा-3 से धमनियों में कोलेस्ट्रॉल कम होता है तथा ट्यूमर ग्रोथ को भी कम करता है। उन्होंने बताया कि अलसी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और फाइटोकेमिकॉल्स से बढ़ती उम्र के लक्षणों को कम करती है।जिससे त्वचा पर झुर्रियां नहीं होती हैं साथ ही अलसी में अल्फालाइनॉइक एसिड पाया जाता है। जो अर्थराइटिस, अस्थमा, डायबिटीज और कैंसर से लड़ने में मदद करता है। साथ ही शरीर के अतिरिक्त वसा को कम करती है जिससे वजन कम होने में सहायता मिलती है। डॉक्टर नरेंद्र सिंह सचान एवं उनकी टीम के सदस्य डॉ नलिनी तिवारी, डॉ मिर्जा फैयाज, महेंद्र सोनकर, तेज बहादुर एवं श्यामलाल आदि ने आजाद लड्डू तैयार किए हैं। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में अलसी के लड्डू खाना सेहत की दृष्टि से काफी अच्छा माना जाता है। अलसी के लड्डू बनाने के लिए इसमें अलसी, गुड, आटा, गोंद,और सूखे मेवों का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि गुड मिलाते समय घी गर्म होना चाहिए।जिससे लड्डू ठीक तरीके से बंध जाते हैं विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी आर सिंह ने कहा कि आजाद लड्डू की तकनीकी कमर्शियलाइजेशन के लिए तैयार है। कोई भी उद्यमी विश्वविद्यालय के साथ एमओयू कर तकनीकी प्राप्त कर सकता है।